11–3–67 रात्रीक्लास – यह है नया अनुभव जो...कोई और सुना ही नहीं सकते हैं। पहले2 सुनाना होता है कि हम रचता बाप और उनकी रचना की आदि–मध्य–अंत को जान गये हैं अर्थात् हम तो आस्तिक बन गये हैं। त्रिकालदर्शी भी बन गये हैं। वो बिचारे समझते हैं कि गीता एपीसोड द्वापर में हुआ।बाप कहते हैं द्वापर में पतित–पावन आकर राजयोग कैसे सिखा सकेंगे?बाप ही कहते हैं कि मुझ अपने बाप को याद करो। एकज भूल से राजाई जाती फिर बाप आकर राजाई दिलाते हैं। बाप ही आकर अभूल बनाते हैं तो राजाई मिल जाती है। हम बच्चों को अंदर में अपार खुशी होनी चाहिए। मनुष्य कोई की सदगति कर नहीं सकते हैं। गाते भी हैं सर्व का सदगति दाता एक परमात्मा है। गुरू लोग कोई का सदगति दाता नहीं हैं। भक्ति है ही दुर्गति। ज्ञान है सदगति का मार्ग। ज्ञान दिन भक्ति है रात। रात दुर्गति दिन फिर सदगति हुआ ना। इन गुरू लोगों को तो शास्त्रों का बहुत अहंकार है। इनको कहा ही जाता है भक्तिमार्ग। ज्ञान और भक्ति। ज्ञान माना ही दिन। ब्राह्मणों का दिन और भक्ति माना रात। रात भी ब्राह्मणों को ही कहेंगे। अब फिर तुम रात से दिन में जा रहे हो। यह है संगमयुग। हर एक मनुष्य कमाई पिछाड़ी पड़े हुये हैं। सन्यासियों को भी धन मिलता है तो धनवान बन जाते हैं। अब तुम जानते हो कि हम बाप से खजाना लेने आये हैं। धनवान भव। तुम जानते हो कि योग बल से हम पवित्र बनते हैं। यह तुम सच्ची कमाई करते हो जो ही साथ जावेगी। शिवबाबा आकर यह अविनाशी ज्ञान रतन देते हैं। पढ़ाई से आमदनी होती है ना। पढ़ाई से ही बैरिस्टर बन जाते है। बाप कहते हैं मैं भी पढ़ाई हूँ। बाप कहते हैं मैं तुमको 21जन्मों लिए धनवान आयुशवान बनाता हूँ। हेल्थ भी देता हूँ। वो है ही अमरपुरी। तुम अमर बनते हो। शिवजयंती पर तुम अपने बाप की जयंती मनाते हो।समझाने लिए ही बत्तियां आदि जलाते हो कि कोई पूछे। मनुष्यों को रास्ता बताने लिए ही शो करते हैं।बाप कहते हैं अभी बच्चे तुम अपवित्र बन गये हो। नई दुनियां में भारत पावन था। अब पुरानी दुनियां में पतित हो गया है।इसलिए ही सभी पुकारते हैं कि हे पतित–पावन आओ।वो बाप आकर तुम बच्चों को सुनाते हैं तो यह भी सुनते हैं। एकज भूल है जो कि गीता में भूल कर दी है।उंच ते उंच भगवान तो शिव है। फिर है पहले2 बिछड़े हुये यह ल.ना.। यह भी याद रखना है कि हम तो नंगे आये थे। अब नंगे जाना है।अपवित्र आत्मा जा नहीं सकती है। पवित्र बनाने वाला एक ही बाप है। सभी जीवात्मायें पार्टधारी हैं।बाप आकर एक ही धर्म की स्थापना करते हैं।तुम जानते हो कि बाप स्थापना कर रहे हें। स्थापना पूरी हो जावेगी फिर विनाश शुरू हो जावेगा। तुम ऐसे भी नहीं चाहते हो कि विनाश जल्दी हो जावे तो हम स्वर्ग में जावे।जावेंगे तो बाप से बिछड़ जावेंगे। यहां तो बहुत अच्छी नालेज मिलती है। फिर देवता बनेंगे तो डिगरेड हो जावेंगे। नालेज नहीं रहेगी। बाप नालेजफुल है तो तुम भी नालेजफुल बनते हो। खुशी तो बच्चों को अपार होनी चाहिए। बाबा बाप भी है, टीचर भी है, गुरू भी है फिर साथ में भी ले जावेंगे।साजन आये ही हैं सजनियों को ले जाने के लिए। सुंदर बनाकर ले जावेंगे।बार2 यही याद करो। तुम बच्चों को बाप की और सृष्टी चक्र की स्मृति आई है। तुम ब्राह्मण कहलाते हो। तो तुमको सच्ची ही गीता सुनानी है। रहमदिल बनना है। मनुष्य बिल्कुल अंधेरे में है। अब तुमको सोझरे में लाना है। मनुष्य बिल्कुल अंधे हैं।अंधों को लाठी से रास्ता बताया जाता है कि कहां ठोकरें नहीं खावे। मनुष्य (आधा) कल्प के रोगी है। अब तुम आधा कल्प के लिए निरोगी बनते हो।तुमको लव शिवबाबा में रखना है।चित्र भी इनका (ब्रह्मा बाबा)का निकाल कर क्या करेंगे?याद तो शिवबाबा को ही करना है। देहधारी कोई को भी याद नहीं करना है। यही भी कहते हैं मैं कोशिश करता हूँ शिवबाबा को याद करने की।बाबा कहेंगे यह भी तो पतित ही है ना।यह पावन बन रहे हैं।यह भी तुम्हारे ही जैसा स्टुडेंट हूँ।सिर्फ इनको फालो करना है ;क्योंकि यह याद में अच्छा रहते हैं।इनसे सीखना है। याद की यात्रा है नम्बरवन। पढ़ाई भी बहुत सहज है। रोज रात को नोट करो कि सारा दिन में क्या किया। हर बात में बाप से राय लेनी है। यहां पैसे आदि की तो बात ही नहीं है।मम्मा क्या लेकर आई थी।कुमारियां तो फ्री हैं। कुमारियों पर कोई भी बोझा नहीं होता है।अगर कुछ है तो समझते हैं कि इसी काम में ही लगा देवें।उस गवर्मेंट में कितना पदमों का उनका खर्चा होता है। बाप तुमको विश्व की राजाई प्राप्त कराते हैं। जिसमें कि खर्चा कुछ भी नहीं है। तुम बच्चों को अंतर्मुखी हो खुशी में रहना है। जिन्होंने कल्प पहले वर्सा लिया होगा वो ही आकर सुनेंगे। दिलशिकस्त नहीं होना चाहिए।दुनियां में तो अंधकार लगा पड़ा है। यह बाप जो रतन देते हैं वो है लाखों की मिलकियत।वो तो भक्ति के कख (तिनके) हैं। भक्ति है ही दुर्गति के लिए। व्यापारी वो तो जो कि पूरा पोतामेल रखे रोज का। तो तुम्हारी उन्नति बहुत होगी। खबरदार भी रहेंगे। भूल हो जावे तो कान पकड़ लेना चाहिए। फिर हम ऐसी भूल नहीं करेंगे। बाबा को लिख भेजो तो भूल.....जावे। ..... .गुनाह2 करते हैं ना।अब सम्मुख राय देते हैं।अंदर–बाहर सच्चे बच्चे पर बाप को भी रहम आता है। अंदर एक बाहर दूसरी होगी तो नुकसान होगा। ओम।